डॉ० ओमप्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

Date 27.08.2020

Page No.:

विषय- संस्कृत, बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा)
प्रथम वर्ष, प्रथम पत्र
किरातार्जुनीयम् - प्रथम सर्ग
पद्यांश व्याख्या

उदारकीर्तेरुदयं दयावतः
प्रशान्तबाधं दिशतोऽभिरक्षया।
स्वयं प्रदुग्धेऽस्य गुणैरुपस्नुता
वसूपमानस्य वसूनि मेदिनी ॥18॥

अन्वयः- उदारकीर्तेः दयावतः अभिरक्षया प्रशान्तबाधम् उदयं दिशतः वसूपमानस्य अस्य गुणैः उपस्नुता मेदिनी वसूनि स्वयं प्रदुग्धे।

भावार्थ- (उदारकीर्तेः दयावतः) महायशस्वी दयालु एवं (अभिरक्षया प्रशान्तबाधं) चारों ओर से सुरक्षा द्वारा निर्बाध (उदयं दिशतः वसूपमानस्य) उन्नति करने वाले कुबेर सदृश (अस्य गुणैः) इस दुर्योधन के गुणों से (उपस्नुता मेदिनी) द्रवित पृथ्वी एक गौ की तरह (वसूनि स्वयं प्रदुग्धे) स्वयं धनों को उत्पन्न करती है।

भावार्थ- यशस्वी एवं दयावान् सुयोधन के गुणों से प्रसन्न होकर मानो पृथ्वी अपने आप सभी धनों को उत्पन्न कर रही है। इस पद्य में दुर्योधन द्वारा रक्षित राज्य में प्राकृतिक साधनों से प्रजा की समृद्धि का वर्णन किया गया है।

पदव्याख्या - उदारकीर्तेः = महान् यशस्वी, उदारा कीर्तिः यस्य सः (बहु०) उदार = उद् + ऋ + घञ् (भावे)। कीर्तिः = कृत् + क्तिन्। दयावतः = दयालु के, दया अस्ति अस्य अतिदयावान्

Scanned with CamScanner

Date ___/___/______

Page No.: ________

तस्य दयावतः (दया + मतुप्। 'मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवादिभ्यः' से 'म' के स्थान पर 'व' हो जाता है। उदयम् - वृद्धि, उन्नति, उद् + इ से भावार्थक अच् प्रत्यय।
प्रशान्तबाधम् = पूर्णतः बाधाहीन, प्रशान्ता बाधा यथा स्यात्तथा (अव्ययीभाव) अथवा प्रशान्ता बाधा यस्मिन् (बहु०), अथवा प्रशान्ता बाधा यस्य सः प्रशान्तबाधः, तम् (बहु०)। दिशतः = सम्पादित करते हुए, दिश् + शतृ। उदयं दिशतः = उन्नति करते हुए। अभिरक्षया = चारों ओर से रक्षा के द्वारा, अभि + रक्ष् + अ + टाप्। स्वयं प्रदुग्धे = अपने आप दूध देती है। अर्थात् अपने आप ही उत्पन्न करती है, प्र + दुह् + लट् कर्मकर्तरि। 'दुहिवच्योर्बहुलं सकर्मकयो रिति वाच्यम्' वार्तिक से दुह् यहाँ सकर्मक क्रिया है, इसका कर्म है 'वसूनि' तथा कर्ता 'मेदिनी'। अस्य गुणैः उपस्नुता = इसके गुणों से द्रवीभूत होकर (यहाँ पृथ्वी को एक गाय जैसा वर्णित किया है, बछड़े के दौड़ने पर गाय 'पेहाती' है और दूध देती है। सुयोधन के गुणों से ~~पृथ्वी~~ पृथ्वी रूपी गाय द्रवीभूत होकर धन रूपी दुग्ध देती है) उप + स्नु + क्त + टाप्। वसूपमानस्य = कुबेर जैसे इस सुयोधन के। वसुः उपमानम् अस्य इति वसूपमानः (बहु०)। वसूनि = धनों को 'वसु तोये धने मणौ' इति वैजयन्ती। मेदिनी = पृथ्वी।
टिप्पणी - (1) यहाँ पृथ्वी को एक गौ के रूप में वर्णित किया गया है, जो सुयोधन के गुणों से द्रवित होकर (पिन्हाईजाकर) धन रूपी दूध दे रही है। (2) यहाँ समासोक्ति अलंकार है। 'समासोक्तिः परिस्फूर्तिः प्रस्तुतेऽप्रस्तुतस्य चेत्' जहाँ प्रस्तुत वृत्तान्त के वर्णन से अप्रस्तुत की प्रतीति हो।

...months but moments, and has time enough." – Rabindranath Tagore

Scanned with CamScanner

यहाँ अप्रस्तुत गौ की प्रतीति हो रही है।
③ भेदकातिशयोक्ति भी है- भेद होते भी
अभेद का वर्णन। 'भेदकातिशयोक्तिस्तु
तस्यैवान्यत्ववर्णनम्' ॥४॥ इति।